आरोह

हिंदी (आधार) की पाठ्यपुस्तक

भाग 2

कक्षा-12

12070

2019-20

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित
राज्य शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ द्वारा स्वीकृत

**STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
CHHATTISGARH**

मूल्य - ₹ ....

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान और प्राशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के निमित्त

© **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान और प्राशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली**

संस्करण - 2019

आवरण पृष्ठ सज्जा
रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधाान और प्राशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रणालय
....

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ....
आवरण पृष्ठ 220 जी.एस.एम. एवं आंतरिक पृष्ठ 80 जी.एस.एम. कागज पर मुद्रित

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है, अवसर की असमानता को कम करना। शिक्षा को राष्ट्रीय आव"यकताओं के अनुरूप बनाना। मौजूदा आधाारभूत सुविधााओं का बेहतर उपयोग करना। शिक्षा का स्तर सुधाारना तथा शिक्षा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को महत्व देना। इन्हीं आधाारभूत तत्वों को धयान में रखते हुए शिक्षाविदों ने हर क्षेत्र् में जनहित के लिए शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम तैयार करने की कोशिक्षा की है जिसे हर प्रांत द्धराज्यत्र में लागू करके ही हम अपने देश में अपनी भावी पीढ़ी के लिए और उनके लाभ के लिए एक ही प्रकार की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं और उनको एक ही प्रकार की शिक्षा देकर उनका आपस में मुकाबला करवा के उनसे अपने देश, अपने राज्य के प्रति एक सकारात्मक सोच उत्पन्न कर शिक्षा का स्वप्न साकार कर सकते हैं। इन्हीं बातों को धयान में रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग के निर्णयानुसार अप्रैल 2018 से राज्य की उच्चतर माधयमिक कक्षा बारहवीं हेतु लागू किया गया है।

विविधाता में एकता इस देश की परम्परा रही है। इस परम्परा को कायम रखते हुए शिक्षा के स्तर को उठाने के लिए तथा अन्य देशों के साथ विकास के आयाम पूरे करने के लिए छत्तीसगढ़ राज्य में अध्ययनरत उच्चतर माधयमिक शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधान विकास मंत्रलय तथा भारत सरकार द्वारा समय-समय पर राज्यों को एक ही राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम स्वीकृत करने व एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को प्रदेश में लागू करने के लिए कहा जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि 2017 से राष्ट्रीय स्तर पर मेडिकल प्रवेश परीक्षा का होना इसी बात का परिचायक है। भविष्य में तकनीकी परीक्षाओं के लिए भी ऐसा सोचा जा सकता है। पुनश्च कक्षा 12 वीं के बाद होने वाली अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन सी.बी.एस.ई. द्वारा किया जाता है तथा सी.बी.एस.ई. द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों से ही प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः राष्ट्रीय स्तर पर ली जाने वाली परीक्षाओं की तैयारी के लिए एक जैसी सामग्री का होना आवश्यक है।

इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विषयक पाठ्यपुस्तकें, जिसे छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा नवीन आवरण पृष्ठ की डिजाइनिंग कर मुद्रित किया गया है, को छत्तीसगढ़ राज्य में पाठ्यपुस्तक के रुप में स्वीकार किया गया है। कक्षा बारहवीं में अधययनरत छात्रें के लिए स्वीकृत एन.सी.ई.आर.टी. की ये पुस्तकें छत्तीसगढ़ राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सि) होंगी। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक तथा प्रकाशन विभाग के प्रति हम आभारी हैं जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य के लिए एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों के लिए त्वरित स्वीकृति व बहुमूल्य मार्ग निर्देशन देकर पुस्तक की गुणवत्ता विकास व सुधाार हेतु आवश्यक सुझाव एवं सहयोग प्रदान किया है।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक, ज्ञानवर्धाक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धि स्तर की वृश) में सहायक सि) होगी, यद्यपि संवर्धान एवं परिष्करण की सम्भावनाएँ सदैव भविष्य के लिए संचित रहती हैं, फिर भी प्रकाशन एवं मुद्रण में निरन्तर अभिवृश) करने के प्रति निष्ठा एवं समर्पण के साथ राज्य शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ के छात्रें, अभिभावकों, शिक्षकों एवं शिक्षाविदों की टिप्पणियों तथा बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे छत्तीसगढ़ राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम लब्धाप्रतिष्ठित होने में हमारा लघु प्रयास सहायक सि) हो सके। समस्त छात्र-छात्रओं की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पुस्तक

समय हर पल बदल रहा है, दुनिया हर क्षण नयी हो रही है, साहित्य में हर पल कुछ जुड़ रहा है, भाषा हर क्षण नया-नया रूप ले रही है-तो फिर इन तमाम बदलाव के साथ कदम बढ़ाते बच्चों के हाथ में एक नयी पाठ्यपुस्तक क्यों नहीं?

पिछले दिनों नयी पाठ्यपुस्तकों के आने के बाद शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों और टेली कांफ्रेंसिंग के ज़रिये अध्यापकों से जुड़ने का मौका मिला। उनकी आँखों में नएपन की चमक थी, ज़बान पर कुछ सवाल, जो घूम फिरकर लगभग हर कार्यक्रम में उठते रहे। बार-बार नयी किताब क्यों? तरह-तरह की हिंदी क्यों? अलग-अलग जवाबों वाले सवाल क्यों? इत्यादि-इत्यादि।

उपर्युक्त सारे सवाल एक विशेष डोर से बँधे हैं-वह है राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005)। यह सुझाती है कि शिक्षा के उद्देश्य व्यापक होने चाहिए जिनमें-'विचार और काम की स्वतंत्रता, दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, नयी स्थितियों का लचीलेपन और रचनात्मक तरीके से सामना करना, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति और आर्थिक प्रक्रियाओं तक सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए काम करने की क्षमता' (रा.पा.-2005, सार संक्षेप)प्रमुख हैं। शिक्षा के इन उद्देश्यों को आज के जटिल होते समाज में विशेषकर भाषा साहित्य के विद्यार्थियों को बार-बार जाँचने परखने की ज़रूरत है। इसी ज़रूरत को पूरी करने का प्रयास है-'आरोह भाग-2' जिसका निर्माण कक्षा-12 में हिंदी (आधार पाठ्यक्रम) पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए किया गया है।

तरह-तरह की हिंदी क्यों? हिंदी एक व्यापक भाषा है और संपर्क भाषा भी है। इसका लेखक और पाठक समुदाय भी बड़ा है। जो कुछ रोज़ रचा जा रहा है उसका दायरा एक ओर कश्मीर से कन्याकुमारी तक है तो दूसरी ओर विभिन्न अनुशासनों के रूप में इसका विस्तार भी है। एक ही शब्द नए प्रसंग में रखे जाने पर अलग अर्थ दे सकता है। यह समाज विज्ञान, पर्यावरण, विज्ञान, कला और साहित्य की भाषा को एक ज़िल्द में पढ़कर बेहतर जाना जा सकता है। भाषा के ये अलग-अलग प्रयोग ही उसे नया करते हैं। वह ठहरी हुई निर्जीव वस्तु नहीं है, बल्कि अपने वैविध्य के साथ विकास करती हुई सजीव धारा है। वैयाकरण किशोरीदास वाजपेयी ने लोक को ही भाषा के बनने का सबसे बड़ा प्रमाण कहा है।

अलग-अलग जवाबों वाले सवाल क्यों? आज का युग सूचना-क्रांति का है। इस युग में धीरे-धीरे मनुष्य सूचनाओं में तब्दील हो रहा है। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में भी- 'हमने समझ के बदले थोड़े वक्त की जानकारी के अंबार को अपना लिया है। इस प्रक्रिया को उलटना होगा। खासकर इस वक्त जब वह सब कुछ जो याद किया जा सकता है, फट पड़ने को तैयार है' (रा. पा. की रूपरेखा-2005, प्राक्कथन)। भारत अपने मूल स्वभाव में ही बहुभाषी और बहुलतावादी संस्कृतिसंपन्न देश है। ऐसे में यहाँ के युवा होते बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता की पहचान किसी एक पैमाने या तयशुदा उत्तर से संभव नहीं। उन्हें जाँचने-परखने के लिए तो उनकी अभिव्यक्ति विशेष की पहचान कर उसे तराशना ही भाषा साहित्य के मूल्यांकन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग

होना चाहिए। इसी को ध्यान में रखकर निर्मित प्रश्न अभ्यास विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उनकी अलग-अलग विशेषता को पहचानने और बढ़ावा देने का माध्यम बन सकते हैं।

उपर्युक्त तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को **काव्य खंड** और **गद्य खंड** (दो खंडों) में बाँटा गया है। **काव्य खंड** को पहले रखने का कारण कविता का सबसे पुरानी विधा होने के साथ-साथ विद्यार्थियों का इसके प्रति स्वाभाविक रुझान भी है। कक्षा-10 तक विद्यार्थी ऐतिहासिक क्रम में कवियों से परिचित हो चुका होता है, इसलिए **काव्य खंड** का क्रम निर्धारण सरलता से कठिनाई के सामान्य शैक्षिक नियम को ध्यान में रख कर किया गया है। अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों में गुजराती के वरिष्ठ कवि उमाशंकर जोशी और उर्दू के शायर फ़िराक गोरखपुरी को स्थान दिया गया है। हिंदी कविता के साथ भारतीय भाषाओं के इन कवियों को पढ़ना बहुभाषी बहुक्षेत्रीय परिवेश में एक ही रचनात्मक भाव-भूमि की पहचान के रूप में देखा जा सकता है।

गद्य खंड में आर्थिक चिंतन, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, संस्कृति और विज्ञान, पर्यावरण और प्रकृति, लुप्त प्राय प्राचीन कला, विभाजन की दरार से झाँकते मनुष्य, फ़िल्मी चरित्र में आम आदमी पर केंद्रित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है।

वर्तमान समय में विकास को परिभाषित करता बाज़ार, सशक्त माध्यम के रूप में फ़िल्म और उन सबसे बनता समाज हमारी सोच के केंद्र में है। जहाँ एक ओर बाज़ार ने रोज़गार और व्यापार के अवसर दिए हैं, वहीं दूसरी ओर हमें अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। नतीजा यह कि दिनोदिन हमारे सोचने-विचारने की दिशा अर्थ-केंद्रित होती जा रही है। जैनेंद्र का बाज़ार-दर्शन जैसा पाठ यह अवसर देता है कि हम बाज़ार में रहते हुए बाज़ारवाद से मुक्ति के रास्ते तलाशें।

स्वतंत्रता प्राप्ति और स्वतंत्र भारत की परिकल्पना में जिन लोगों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है उनमें गांधी और आंबेडकर का नाम सबसे पहले आता हैं। 'जातिभेद का उच्छेद' नामक महत्त्वपूर्ण भाषण जो काफी विरोधों के बाद भी छपा और बहुत लोकप्रिय हुआ; उसके दो अंश यहाँ लिए गए हैं जो वास्तव में पिछड़े वर्गों को ध्यान में रखते हुए जाति-विमर्श पर विचार के बहाने स्वतंत्रता, समता और बंधुता पर आधारित आदर्श समाज को विचारने का अवसर देते हैं।

पुस्तक की प्रस्तुति 'एक नयी किताब' का सबसे नया और अहम हिस्सा होती है- खासतौर से तब जब पाठ्यचर्या बच्चों के अपने परिवेश और जीते जागते संदर्भों से जोड़कर शिक्षा की बात कर रही है। इस पुस्तक का चयन, प्रश्न-अभ्यास और साज-सज्जा-तीनों ही नए शैक्षिक परिवेश का निर्माण करने में सहायक होंगे।

पुस्तक में ऐसे अभ्यास भी दिए गए हैं जिनके कारण इस बार 'आरोह भाग-1' और 'वितान भाग-1' को पढ़ने की ज़रूरत पड़ सकती है। साथ ही ये अभ्यास पुस्तकालयों में पड़ी बहुत-सी अनछुई किताबों की दुनिया तक ले जाने को विवश करेंगे और नयी पुस्तकों, अखबारों व रोज़ की खबरों के प्रति सचेत कराने में समर्थ होंगे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा(2005) में इन बातों पर खासा बल है।

अभिव्यक्ति की अपनी भाषा को आमंत्रित करती 'आरोह भाग-2' आपके हाथों में है जिसके संशोधन परिवर्धन के लिए सुझावों का निरंतर स्वागत रहेगा। ❑❑❑

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, पूर्व प्रोफ़ेसर, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू. नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनूप कुमार, प्रोफ़ेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

अनामिका, रीडर, सत्यवती कॉलेज, नयी दिल्ली

उषा शर्मा, प्रोफ़ेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

दिलीप सिंह, प्रोफ़ेसर एवं कुल सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई

नीलकंठ कुमार, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

नीरजा रानी, पी.जी.टी., चंद्र आर्य विद्यामंदिर, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नयी दिल्ली

रवीन्द्र कुमार पाठक, पी.जी.टी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, भारतनगर, दिल्ली

रवीन्द्र त्रिपाठी, पत्रकार, नयी दिल्ली

रामबक्ष, प्रोफ़ेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

संजीव कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, देशबन्धु कॉलेज, नयी दिल्ली

समीर वरुण नंदी, प्रवक्ता, बी.एच.ई.एल. स्कूल, हरिद्वार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, प्रोफ़ेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों/परिजनों, प्रकाशकों तथा 'शिरीष के फूल' के फोटोग्राफ़ के लिए शमशेर अहमद खान के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित शारदा कुमारी, प्रवक्ता, डाइट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली तथा पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कम्प्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के प्रभारी परशराम कौशिक; कॉपी एडीटर समीना उसमानी, मनोज मोहन सहाय, अवध किशोर सिंह; प्रूफ़ रीडर कविता और डी.टी.पी. ऑपरेटर कमल कुमार के प्रति आभारी हैं।

विषय-क्रम

आमुख iii
यह पुस्तक v

काव्य खंड

1
हरिवंश राय बच्चन 3
1. आत्मपरिचय
2. एक गीत

2
आलोक धन्वा 9
पतंग

3
कुँवर नारायण 15
1. कविता के बहाने
2. बात सीधी थी पर

4
रघुवीर सहाय 21
कैमरे में बंद अपाहिज

5
गजानन माधव मुक्तिबोध 27
सहर्ष स्वीकारा है

6
शमशेर बहादुर सिंह 34
उषा

7
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 39
बादल राग

8
तुलसीदास 45
1. कवितावली (उत्तर कांड से)
2. लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

9
फ़िराक गोरखपुरी 56
1. रुबाइयाँ
2. गज़ल

10
उमाशंकर जोशी 62
1. छोटा मेरा खेत
2. बगुलों के पंख

गद्य खंड

11
जैनेन्द्र कुमार 67
बाज़ार दर्शन

12
धर्मवीर भारती 81
काले मेघा पानी दे

13
फणीश्वर नाथ रेणु 90
पहलवान की ढोलक

14
विष्णु खरे 102
चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

15
रज़िया सज्जाद ज़हीर 112
नमक

16
हजारी प्रसाद द्विवेदी 125
शिरीष के फूल

17
बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर 135
1. श्रम विभाजन और जाति-प्रथा
2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज

18
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी 143
क्या लिखूँ